परमात्म-शक्ति द्वारा होगा स्वर्णिम भारत का निर्माण

झारखंड चैम्बर ऑफ कॉमर्स के महासचिव आर.डी.सिंह , जी.के.पिल्लई, ए.के.घोष, ब्र.कु.निर्मला व ब्र.कु.भारतभूषण कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए।

राँची। परमात्म शक्ति कल्याणकारी, सार्वभौमिक एवं अनंत है। जिनसे वैश्विक समानता, समरसता तथा एकरसता का सृजन एवं पालन होता है।

उक्त उद्गार झारखंड चैम्बर ऑफ कॉमर्स के महासचिव आर.डी.सिंह ने ब्रह्माकुमारी संस्था के स्वर्णिम 75 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित प्लेटिनम जुबली समारोह 'एक ईश्वर एक विश्व परिवार' का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि परमात्मा ने सतयुगी स्वर्णिम युग की स्थापना की थी जिसे स्वर्ग, हेवेन, जन्नत इत्यादि नामों से जाना जाता है। वहां सभी लोग वसुधैव-कुटुम्बकम की भावना से प्रेरित होकर कार्य करते थे। प्लेटिनम जुबली समारोह में विकसित हुआ वातावरण स्वर्णिम भारत के निर्माण का स्वप्न अगले दशक में साकार करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा।

एच.ई.सी. के चेयरमैन सह प्रबंध निदेशक जी.के.पिल्लई ने कहा कि सत्य ज्ञान के अभाव में मानव अपने मन में गलत धारणा को अपनाता गया, जो बाद में परम्परा और अंधविश्वास के रूप में आने वाली पीढ़ियों को मिलती गयी।

मेकन के सी.एम.डी. ए.के.घोष ने कहा कि ईश्वरीय शक्तियां विश्व को एकता के सूत्र में पिरोती है तथा जख्मों पर मरहम लगाती है। आज प्रत्येक ढलते हुए दिन के साथ मानव मात्र की पीड़ाएं बढ़ती ही जा रही है। इसका मूल कारण है कि हमने अपने-आपको सत्यता और दिव्यता के अनादि स्रोत परमात्मा से विमुख कर दिया है।

ब्र.कु. निर्मला एवं पानीपत के ब्र.कु. भारतभूषण ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

आओ जीएं तनावमुक्त जीवन

तन के भान में आ गये और तनाव आ गया। तन से न्यारे हो गये और तनाव भाग गया..बस इस मंत्र को आप जीवन में अपना लें तो तनाव आपका पीछा नहीं करेगा। आत्मा तन में आकर तन के वश हो गयी, देह अभिमान बढ़ा, अहंकार में वृद्धि हुई और मनुष्य अपनी शक्तियों को भूलता गया। परिणाम स्वरूप उसे हर बात बड़ी लगने लगी -यही कारण बना इस बढ़ते तनाव का।

हम बड़े हैं और परिस्थितियां या अन्य बातें छोटी हैं। हम शक्तिशाली हैं और समस्याएं कमजोर हैं। यह अनुभूति बढ़ती जायेगी, ज्यों-ज्यों हम स्वयं को देह से न्यारी एक सूक्ष्म आत्मा समझते जायेंगे। हम अभ्यास किया करें कि मैं सूक्ष्म ज्योति स्वरूप आत्मा हूँ। मैने इस तन में प्रवेश किया है...मैं इस देह की मालिक हूँ...मन-बुद्धि व संस्कारों की मालिक हूँ...इस स्मृति से तनाव स्वत: ही कम हो जायेगा। जैसे ही आप अपने आत्मिक स्वरूप पर केन्द्रित होंगे आप पायेंगे कि आपकी सम्पूर्ण अशान्ति, आपका सम्पूर्ण भारीपन इस स्वरूप में समाकर शान्त हो रहे हैं। आपके विचार भी तीव्रता से शान्त हो जाएंगे। अत: दिन में कम से कम पाँच बार ये अभ्यास अवश्य करें। बार-बार अभ्यास करने से अनुभव सूक्ष्म होता जायेगा। जितना समय हम तनाव में देते हैं उससे चौथाई समय भी यदि इस अभ्यास में देंगे तो तनाव आपसे विदा ले लेगा।अपने में विश्वास व भगवान में विश्वास हमें तनाव-मुक्त रखता है। जब मनुष्य का स्वयं में विश्वास नहीं होता, तो वह छोटी-छोटी बातों को भी बड़ा अनुभव करता है, फलस्वरूप उसे तनाव होता है। परन्तु हमें यह जानना चाहिए कि हम सर्वशक्तिवान के बच्चे शक्तिशाली हैं।

सबेरे - सबेरे

ब्रह्म मुहुर्त हमारे लिए प्रतिदिन वरदान लेकर आता है। स्वयं वरदाता मुक्त हस्तों से वरदान बांटता है। यदि हम अपनी बुद्धि रूप तिजोरी को स्वच्छ रखेंगे तो वह इसमें वरदान भर देगा। याद रहे -जो आत्माएं लम्बा समय ईश्वरीय नशे में रहती हैं उनमें वरदानों को धारण करने की शक्ति आ जाती है। क्योंकि वरदान एक पवित्र व शक्तिशाली बुद्धि में ही ठहर सकते हैं।

सबेरे एक सीन इमर्ज करें कि अव्यक्त बापदादा नीचे मेरे समझ उतरते हैं, मेरे मस्तक पर तिलक देते हैं और साथ में वरदान देते हैं -बच्चे, माया जीत भव, बच्चे विजयी रत्न भव, विघ्नविनाशक भव व शक्ति सम्पन्न भव। इन्हें कई बार याद कर लें तो सारी दिनचर्या पर इनका प्रभाव दिखाई देगा।

इसके बाद स्वयं को चार बातें याद दिलायें...जो सर्वशक्तिवान है वह मेरा है...वह मेरे लिए है...वह मेरे साथ रहता है...तथा उसकी शक्तियां मुझमें प्रवेश करती हैं। ये चारों ही बातें परमात्म-मिलन का सहज सुख देने वाली हैं। इन पर थोड़ा-थोड़ा चिन्तन अवश्य करें। तत्पश्चात याद करें कि संसार की अनेक आत्माओं को हमारी सकाश की बहुत-बहुत आवश्यकता है। फिर विश्व को परमात्म सकाश देने के लिए इस तरह अभ्यास करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ...ग्लोब पर विराजमान हूँ...सर्वशक्तिवान की किरणें मुझमें समा रही हैं, फिर ये किरणें मुझसे चारों ओर फैल रही हैं, निर्बल आत्माओं को शक्तियां मिल रही हैं। इस अभ्यास से आप स्वयं को भी बहुत शक्तिशाली अनुभव करेंगे। प्रात:कालीन उठते ही पहले दस मिनट प्रत्येक मनुष्य के लिए अति-अति महत्वपूर्ण है।

आनंद। अमृत महोत्सव का उद्घाटन करते हुए अमूल डेयरी के एमडी राहुल श्रीवास्तव, ए.एम.शेख, दीपक भाई पटेल, ब्र.कु.सरला दीदी, महंत श्री भगवान दास महाराज, ब्र.कु.गीता, ब्र.कु.अमर, ब्र.कु.डॉ.मुकेश तथा अन्य।

ब्रह्मपुर। प्लेटिनम कार्यक्रम के अवसर पर मंचासीन हैं ब्र.कु.सूर्य, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री रमेश पटनायक, ब्र.कु.बसंती तथा सुभाष महाराना।

अजमेर। संचार राज्य मंत्री सचिन पायलट को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.रुपा, ब्र.कु.राधिका एवं ब्र.कु.अंकिता।

परली वैजनाथ। शांति अनुभूति शिविर का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.गीता, ब्र.कु.महानंदा, ब्र.कु.सुनिता तथा अन्य।

बाँदा। आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए राज्यमंत्री नसीमुद्दीन सिद्दिदी, कृषि राज्य मंत्री लक्ष्मी नारायण चौधरी, ब्र.कु.गीता, ब्र.कु.शालिनी।

इलाहाबाद। 'सबका मालिक एक' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ.राज, ब्र.कु.मनोरमा, स्वतंत्र चेतना के ब्यूरो चीफ के.के.श्रीवास्तव, ब्र.कु.श्रद्धा।